

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. १०१० - घ

Title विजयाकल्पः

Author _____

Extent १ Age _____

Subject आयुर्वेदः सम्पूर्णम्

नं० १०१०-घ
विजयाकल्पः (आयुर्वेद) पत्रम् १
पत्रम् १ (एकम्) (सम्पूर्णम्)
नं० १०१०-घ

नं० १०१०६
विजया कल्पः

ॐ अथ विजया कल्प लिख्यते अष्टादशमासेषु नक्षत्रे संध्या समये।
मंत्र विजया बीज रोपणोका ॐ विजया सत्तकरा देवि शुद्धस्तान प्रकाशनी।
बीज बंधकरा देवी शंभु प्रिय नमोस्तुते इति मंत्रवार ३ जपणा रोपणी आ
दित्यवार पंचपकरणा मंत्र तीनवार पठकेकाटलेणी छाया मेसुखा विण स्त्री
कोपर छाया नापडे खेत मे अश्विनी नक्षत्र मेकाटलेणी तब विजया टंक १
गोके दूध सोपीवे प्रथमे मास गंधपका गुटका बंधे दूजे मास विजया
टंक २ गोघृत सोखायतो सर्व व्याधि नाश होय तृतीये मासे टंक ३ निलके
तेल सोखायतो आप मे आप ससे चौथे मास टंक ४ नागर मोथा सोखाया
तो पवन बंधे पंचमे मास टंक ५ आवळे सोखायतो सहस्र कोस जाय छ
ठवे मास टंक ६ कुलिंगन सोखायतो अष्ट सिद्धि होय सातवे मास टंक ७ अ
कलकरा सोखायतो सात मास की गम होय अष्टमे मास टंक ८ चित्रक सो
खायतो बिरबना चढे नवमे मास टंक ९ चावळे सोखायतो तांबा वणी दे
ही होय दसमे मास टंक १० सिमल के बीज सोखायतो पात्राण करे ग्या
रवे मास टंक ११ मालकंगुली सोखायतो ताबापर अमरी करे सोना होय
बारहमे मास टंक १२ रुद्र वंती सोखायतो सर्व सिद्ध होय इति विजया क
ल्प संपूर्ण शुभं भवतु